Series BRH

कोड नं. **3/1**
Code No.

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI

(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे
Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 80
Maximum Marks : 80

निर्देश : *(i)* *इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं — क, ख, ग और घ ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्थित उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था । मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हुए हैं । प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था । मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुँचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे । कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया । मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर दूसरा दीपक क्यों जलाया ? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया । आचार्य ने सहजता से कहा, 'तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से सम्बन्धित था और तब जो दीपक जल रहा था, उसका ख़र्च शासन-तंत्र उठाता है । लेकिन अब चूँकि वह कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया । अभी जो दीपक मैंने जला रखा है उसके ख़र्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ । मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ ?'

मेगास्थनीज ने नैतिक जवाबदेही का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं देखा था । वह समझ गया कि मौर्य-शासन का भविष्य उज्ज्वल है ।

(i) आचार्य विष्णुगुप्त कहाँ रहते थे ?
   (क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में ।
   (ख) गाँव की एक मामूली झोंपड़ी में ।
   (ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में ।
   (घ) गंगातट पर बने आश्रम में ।

(ii) मेगास्थनीज के सोच का कारण था
   (क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना ।
   (ख) उनका अत्यन्त व्यस्त रहना ।
   (ग) एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना ।
   (घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना ।

(iii) मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा ?

(क) उनके स्वास्थ्य की कुशल ।

(ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण ।

(ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में ।

(घ) राज्य की प्रजा के विषय में ।

(iv) दीपक की घटना संदेशवाहक है

(क) प्रशासक की कर्मठता की ।

(ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की ।

(ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की ।

(घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की ।

(v) 'दुरुपयोग' शब्द में उपसर्ग है

(क) दु

(ख) दुर

(ग) दुरु

(घ) दुर्

2. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प लिखिए : *1×5=5*

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता । कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है । हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं । किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं । अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ों में बाँट देता है । लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे ? नहीं । ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी । हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था । वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं ।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है । हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है । सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन

नहीं करते । समस्या आए बग़ैर हम रास्ता नहीं खोजते । समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं । ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं । उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं ।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है ।

(i) बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि

(क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं ।

(ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है ।

(ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता ।

(घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रूप में आती ही हैं ।

(ii) पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि

(क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है ।

(ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है ।

(ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है ।

(घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता

(iii) व्यक्ति सफलताओं के बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि

(क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं ।

(ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देती ।

(ग) सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चिंत हो जाता है ।

(घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती हैं ।

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

(क) सफलता का मार्ग

(ख) सफलता और असफलता

(ग) असफलताओं से प्रेरणा

(घ) असफलता सफलता का आधार

(v) 'आधार' का पर्यायवाची शब्द है

(क) धारदार

(ख) स्थिर

(ग) बुनियाद

(घ) जड़

3. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

मान लूँ मैं हार कैसे ?

रोकना मुझको असंभव रूप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर और काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता क़दम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे ?

आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है,
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरि-अतल को जीत लेना,
ज़िन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे ?

(i) लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है

(क) रूप की मदिरा ।
(ख) मार्ग की बाधाएँ ।
(ग) दुर्भाग्य का अभिशाप ।
(घ) जलती चिता ।

(ii) अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है

(क) मदिरा द्वारा अन्तर की प्यास बुझाना ।
(ख) उत्साही जीवन में विनाश की हुंकार भरना ।
(ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना ।
(घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना ।

(iii) पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है ?

(क) पथ की बाधाओं पर ।
(ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर ।
(ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर ।
(घ) गतिहीन जीवन पर ।

(iv) 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ' पंक्ति का आशय है

(क) मैं रेतीले मैदान का बटोही हूँ ।

(ख) मैं युद्धस्थली का योद्धा हूँ ।

(ग) मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ ।

(घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ ।

(v) 'मनुज-अधिकार' में समास है

(क) द्विगु

(ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरुष

(घ) बहुव्रीहि

4. नीचे लिखे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

धूप की तपन ख़ुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेड़ों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया ।
हजारों मील चलकर
गईं थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफ़ा
नदियों को फिर जिसने भर दिया ।

(i) पेड़ों की प्रतिज्ञा है

(क) सबको फल देना

(ख) धूप की तपन लेना

(ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना

(घ) संसार का हित करना

(ii) बदले में धूप पेड़ों को देती है

(क) शीतल छाया

(ख) फूलों की सुगंध

(ग) पत्तों की हरियाली

(घ) शाखाओं की मज़बूती

(iii) नदियाँ हज़ारों मील किसलिए चलती हैं ?

(क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए ।

(ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए ।

(ग) सागर को मीठा जल देने के लिए ।

(घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए ।

(iv) सागर नदियों का ऋण चुकाता है

(क) उनके मीठे पानी को स्वीकार कर ।

(ख) उनको खारी जल का उपहार देकर ।

(ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर ।

(घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर ।

(v) कविता का संदेश है

(क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार ।

(ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव ।

(ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता ।

(घ) कृतघ्नता जीवन का अभिशाप ।

खण्ड ख

5\. (i) जहाँ एक प्रधान उपवाक्य और एक या एकाधिक उपवाक्य योजकों द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं *1*

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) जटिल वाक्य

(ii) नीचे लिखे वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए : *1*

(क) वे भारत आए और 73 वर्ष की ज़िंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए ।

(ख) वे अक्सर माँ की स्मृति में डूब जाते थे ।

(ग) उनको जितनी चिंता हिंदी की थी उतनी और किसी की नहीं ।

(घ) समय पर कार्य समाप्त करो या यहाँ से चले जाओ ।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए : *1*

(क) मैंने जब उन्हें देखा तब वे बीमार थे ।

(ख) उन्होंने कोलकाता से बी.ए. किया और इलाहाबाद से एम.ए. ।

(ग) बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया ।

(घ) वे दिन याद आते हैं जब हम एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे थे ।

(iv) निम्नांकित वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए : *1*

(क) हमारी गोष्ठियों में वे गंभीर बहस करते ।

(ख) वे बेबाक राय और सुझाव देते थे ।

(ग) उन्होंने कभी सोचा भी न था कि इतने आदमी एकत्रित होंगे ।

(घ) दिल्ली आने पर वे मुझसे मिले ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×4=4*

(i) उसने उनके अनुकरणीय जीवन को नमन किया ।

(क) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ख) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ग) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिग, एकवचन ।

(घ) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ii) उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की ।

(क) संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ग) संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन ।

(घ) संज्ञा, द्रव्यवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(iii) वे माँ की स्मृति में अक्सर डूब जाते ।

(क) क्रिया-विशेषण, कालवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण ।

(ख) क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण ।

(ग) क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण ।

(घ) क्रिया-विशेषण, परिमाणवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण ।

(iv) जैसा करोगे वैसा भरोगे ।

(क) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ख) सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(ग) सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

(घ) सर्वनाम, निजवाचक, पुल्लिग, एकवचन ।

7. (i) कर्मवाच्य कहते हैं *1*

(क) जहाँ कर्ता प्रधान होता है ।

(ख) जहाँ कर्म प्रधान होता है ।

(ग) जहाँ भाव प्रधान होता है ।

(घ) जहाँ अन्यपद प्रधान होता है ।

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए : 1

(क) उन्हें मुम्बई भेज दिया गया है ।

(ख) किस आधार पर ऐसा कहा गया है ?

(ग) आप इस प्रसंग का उल्लेख मत कीजिए ।

(घ) उससे यहाँ बैठा नहीं जाएगा ।

(iii) निम्नलिखित में से कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए : 1

(क) वह भारत की एक उल्लेखनीय विभूति है ।

(ख) उस निबंध को पढ़िए और समझिए ।

(ग) उसके विषय में जानकारी एकत्र की जाए ।

(घ) वह पंखहीन है, उससे उड़ा नहीं जाएगा ।

(iv) निम्नांकित में से भाववाच्य वाले वाक्य का चयन कीजिए : 1

(क) वह हमारा विरोध कर रहा है ।

(ख) उससे यह काम समय पर पूरा न हो सकेगा ।

(ग) अदालत में उसके नाम का उल्लेख किया गया ।

(घ) आइए, बैठा जाए ।

8. (i) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य का चयन कीजिए : 1

(क) तुम देश का हित-चिंतन करो ।

(ख) तुम जिस देश में रहते हो वह महान् है ।

(ग) आस-पास देखिए और पता लगाइए ।

(घ) यह इस कविता का केन्द्रीय भाव है ।

(ii) 'नेताजी ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया' — वाक्य का कर्मवाच्य होगा 1

(क) नेताजी से देश के लिए सब कुछ त्यागा गया था ।

(ख) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ का त्याग कर दिया था ।

(ग) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्यागा गया ।

(घ) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग दिया गया ।

(iii) <u>अरे</u> ! तुमने भी ऐसा कह दिया ? रेखांकित का परिचय दीजिए । 1

(क) अव्यय, घृणासूचक

(ख) अव्यय, हर्षसूचक

(ग) अव्यय, शोकसूचक

(घ) अव्यय, विस्मयसूचक

(iv) 'मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी ।' में कौन-सा अलंकार है ? *1*

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) यमक

(घ) अनुप्रास

9. (i) 'मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों' में अलंकार है *1*

(क) उत्प्रेक्षा

(ख) उपमा

(ग) रूपक

(घ) श्लेष

(ii) प्रस्तुत काव्यांशों में 'यमक' अलंकार का उदाहरण छाँटिए : *1*

(क) पहेली-सा जीवन है व्यस्त ।

(ख) दुख हैं जीवन-तरु के फूल ।

(ग) क्यों सहे संसार हाहाकार ।

(घ) कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।

(iii) 'पीपर-पात सरिस मन डोला' में कौन-सा पद 'उपमान' है ? *1*

(क) पीपर-पात

(ख) मन

(ग) सरिस

(घ) डोला

(iv) देखूँ उसे मैं नित बार-बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ।

काव्यांश में अलंकार है *1*

(क) रूपक

(ख) उपमा

(ग) उत्प्रेक्षा

(घ) श्लेष

खण्ड ग

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए : *1×5=5*

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे । नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा ।

(i) बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था

(क) पद्मविभूषण ।

(ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार ।

(ग) विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियाँ ।

(घ) भारतरत्न ।

(ii) बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगे ?

(क) शहनाई की जादुई आवाज़ के कारण ।

(ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज़ के कारण ।

(ग) भाईचारे की भावना को मज़बूत करने के कारण ।

(घ) अजेय संगीतयात्रा के कारण ।

(iii) बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है

(क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना ।

(ख) संगीत की शास्त्रीय परंपरा को जागृत रखना ।

(ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना ।

(घ) एक सच्ची इन्सानियत का उदाहरण पेश करना ।

(iv) 'संगीत नाटक अकादमी' क्या है और कहाँ स्थित है ?

(क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था ।

(ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन ।

(ग) नई दिल्ली में स्थित एक विश्वविद्यालय ।

(घ) नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्यकला से संबद्ध संस्था ।

(v) 'खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा ।' — प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) असाधारण वाक्य

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति-विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता ।

जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा । एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है । जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है ।

(i) लेखक के अनुसार व्यक्ति-विशेष की संस्कृति का स्वरूप है

(क) व्यक्ति-विशेष के द्वारा की गई खोज ।

(ख) व्यक्ति-विशेष के द्वारा उपयोगी वस्तुओं का अनुसंधान ।

(ग) व्यक्ति-विशेष की उत्कट अभिलाषा जो खोज के लिए प्रेरित करती है ।

(घ) आविष्कार कराने वाली योग्यता और प्रवृत्ति ।

(ii) सभ्यता नाम है उस वस्तु का

(क) जो खोजी गई है ।

(ख) जो उपयोगी है ।

(ग) जो उपयोगी और संस्कृति द्वारा आविष्कृत है ।

(घ) जो अपने आप में विशिष्ट है ।

(iii) परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होता है ?

(क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे ।

(ख) जो विशिष्ट पदार्थों का अनुसंधान करे ।

(ग) जो नई-नई खोजों को प्रस्तुत करे ।

(घ) जो पूर्णतः परिष्कृत हो ।

(iv) वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जाता है उसको

(क) जो नई चीज़ की खोज करता है ।

(ख) जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है ।

(ग) जो पूर्वजों से प्राप्त वस्तुओं का परिष्कार करता है ।

(घ) जो विवेक के आधार पर किसी नए तथ्य का दर्शन करता है ।

(v) 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है ।' प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है

(क) सरल

(ख) संयुक्त

(ग) मिश्र

(घ) योजक

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : *2×5=10*

(क) फ़ादर की मृत्यु किस रोग के कारण हुई ? पाठ के लेखक ने उनके लिए उस रोग के विधान पर क्या टिप्पणी की है ? स्पष्ट कीजिए ।

(ख) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है ?

(ग) 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ।

(घ) शहनाई की दुनिया में 'डुमराँव' को क्यों याद किया जाता है ? पाठ के आधार पर लिखिए ।

(ङ) किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ ? स्पष्ट कीजिए ।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । *2*

(ख) परशुराम ने 'सेवक' और 'शत्रु' किसको कहा है ? *2*

(ग) 'सहसबाहु' कौन था ? *1*

अथवा

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं,
दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म ।

(क) फ़सल को उपजाने में नदी का क्या योगदान है ? *1*

(ख) फ़सल से 'हाथों के स्पर्श' का क्या सम्बन्ध है ? *2*

(ग) फ़सल मिट्टी का गुणधर्म कैसे है ? *2*

13. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(क) 'छाया मत छूना' कविता में 'मृगतृष्णा' किसे कहा गया है और क्यों ? *2*

(ख) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दी हैं ? *2*

(ग) 'संगतकार' किसे कहते हैं ? *1*

14. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ को दृष्टि में रखते हुए बताइए कि एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है । *5*

अथवा

जितेन नार्गे ने 'साना साना हाथ जोड़ि' की लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में जो जानकारियाँ दीं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ।

खण्ड घ

15. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबन्ध लिखिए : 5

(क) **विद्यालय का वार्षिक उत्सव**

विद्यालय का जीवन, वार्षिक उत्सव का दिन, उत्सव का विवरण, आपकी भूमिका ।

(ख) **परिश्रम ही जीवन का आधार**

परिश्रम का महत्त्व, जीवन में उसकी उपयोगिता, भाग्यवाद का निराकरण ।

16. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है ? साथ ही उसे पढ़ाई के सम्बन्ध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए । 5

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ । इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निदेशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए ।